Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 1 | (Jan – Mar 2026)

स्त्री अस्मिता का प्रश्न : वाया अक्का महादेवी

अंशिका त्रिपाठी
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
Email: anshikatripathi2206@gmail.com

सारांश

हिंदी साहित्य में मध्यकाल की स्त्री कवयित्री मीरा के काव्य से हम सभी परिचित हैं। मीरा के विषय में हिंदी साहित्य के इतिहास में शुक्ल जी ने भी लिखा है और विश्वविद्यालयों में मीरा को एक सशक्त एवं मध्यकाल की नारीवादी स्वर के रूप में पढ़ाया भी जाता है। जिन्होंने कृष्ण के प्रेम में लोकलाज की चिंता नहीं की और प्रेम दीवानी हो घर, संसार त्याग दिया। मीरा को पढ़ने के पहले हमें मध्यकाल और भक्ति परंपरा को समझने के लिए कन्नड़ की कवयित्री अक्का महादेवी को पढ़ना चाहिए। अक्का महादेवी का सम्बन्ध लिंगायत परम्परा से था। जिसका उनके वचनों पर प्रभाव देखा जा सकता है। इस लेख में अक्का महादेवी के वचनों के माध्यम से मध्यकाल में नारी की स्थिति पर विचार किया गया है। साथ ही प्रस्तुत लेख अक्का महादेवी के रचना संसार पर भी प्रकाश डालता है।

बीज शब्द:- अक्का महादेवी, मध्यकाल, लिंगायत परम्परा, स्त्री अस्मिता, स्त्री देह।

प्रस्तावना

मीरा वृंदावन गई थी और जीव गोस्वामी से मिलना चाहती थी, किंतु जीव गोस्वामी ने यह कह कर मिलने से मना कर दिया कि मैं स्त्रियों से नहीं मिलता। यह सुन कर मीरा ने उत्तर दिया कि मुझे तो यही ज्ञात था कि इस संसार में एकमात्र पुरुष श्री कृष्ण हैं, आज मालूम हुआ कि कोई दूसरा पुरुष भी है। मीरा से पहले अक्का महादेवी ने कहा था कि 'इस संसार में पुरुष तो मात्र एक है जिसके लिए सब पुरुष सब स्त्रियां हैं, पत्नियां।' यह कथन न केवल एक भक्त द्वारा अपने स्वामी के लिए कहा गया है, बल्कि एक स्त्री द्वारा उस पितृसत्तात्मक समाज को आईना दिखाना है। जो पुरुष होने का दंभ भरता है। मध्यकाल में दक्षिण भारत हो या फिर भारत के अन्य प्रांत हो यहाँ महिला संतों का उदय ही एक सामाजिक विद्रोह था।

कन्नड़ की कवयित्री अक्का महादेवी का "बारहवीं शताब्दी में मैसूर राज्य के शिवभोग्या जिले के पास उडुतडि नगर में एक ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ था। मीरा की तरह बचपन में ही उन्होंने शिव को अपना पति मान लिया था।"[1] उनके पिता निर्मलशेट्टी और माता सुमति थी। उनके घर में सभी शिव भक्ति करते थे। अक्का को शिव भक्ति परिवार से ही प्राप्त हुई थी। 10 वर्ष की उम्र में ही अक्का महादेवी ने किसी अज्ञात गुरु से दीक्षा प्राप्त कर ली थी और तभी से अपना पुनर्जन्म भी मानती थी। दक्षिण भारत के वीरशैव परम्परा जिसे लिंगायत भी कहा जाता है, से उनका संबंध था। इस परंपरा में लगभग 300 वाचनकार थे, जिसमें 30 महिला संत थी। लिंगायत मुख्यत: भक्ति से संबंधित था तथा इसमें जाति, धर्म एवं लिंग के स्तर पर कोई भेदभाव नहीं था। ये मूर्ति पूजा एवं बाहरी आडंबर का विरोध करते थे, इनका मानना था कि आत्मा या चेतना के स्तर पर स्त्री और पुरुष समान होते हैं तथा उन्हें समाज में भक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। अक्का महादेवी भी इसी परम्परा से आती हैं। उनके लगभग 350 वचन आज उपलब्ध हैं।

जैसे थेरीयों को, मीरा को, अंडाल को उनके समय एवं समाज से अलग करके नहीं पढ़ा जा सकता उसी, तरह अक्का महादेवी को भी उनके समय में रख कर ही पढ़ा जा सकता है। साहित्य में जिस नारीवादी प्रखर स्वर की तलाश की जाती है, वह अक्का महादेवी में सुनाई पड़ता है, मात्र सुनाई ही नहीं पड़ता आधुनिक स्त्री का हाथ पकड़ कर आगे की राह भी दिखता है। बौद्धकाल में भी पितृसत्तात्मक समाज नारी देह को रास्ते की रुकावट मानता था। "बौद्ध धर्म में भी देह को लेकर थेर और थेरियों ने विचार

किए। थेरियों ने तो अपने देह को केंद्र में रखा और उससे ऊपर उठने का संघर्ष किया। लेकिन यह जानना दिलचस्प है कि थेर भी केंद्र में स्त्री देह को ही रखते हैं, हिकारत से देखते हुए और उसे दुखों की खान बताते हुए।"[2] और आधुनिक समय में भी पितृसत्ता नारी को देह तक ही सीमित कर देना चाहता है। क्या आज की भारतीय नारी को अपने उत्थान के लिए पश्चिम की ओर ताकना होगा? या अपनी पुरखिनों के पास जाना होगा जिन्होंने ऐसे समय में संघर्ष किया जब औरतों को घर से बाहर तक आने का अधिकार नहीं प्राप्त था, वो या तो पत्नी थी, या दासी, या तो समाज द्वारा वेश्या बना दी जाती थीं। उन्होंने उस समय की कठिन परिस्थितियों के सामने घुटने नहीं टेके और अपनी स्वेच्छा से अपनी राह बनाई। "स्त्रियाँ समाज में उपेक्षित मोठ की बोरी की तरह नहीं पड़ी रहीं किसी भी युग में। यह कोई मीरांकालीन समाज का अपवाद नहीं है कि वे जितना जैसे बन पड़ता था कुछ जगह अपने लिए बना लेती थीं।"[3] वो यह जानती थी कि एक बार महिला का सांसारिक विवाह से अलग हो जाने पर पितृसत्तात्मक समाज का सामना करना कठिन होगा फिर भी उन्होंने यह रास्ता चुना।

अक्का महादेवी के बौद्धिकता में लिंगायत परम्परा का प्रभाव महत्वपूर्ण है। यह परम्परा लिंग के आधार पर स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं मानती थी। ईश्वर निर्विकार, अपार और अनाम है कोई भी उसे प्राप्त कर सकता है। अक्का महादेवी तर्क करती हैं कि जब ईश्वर हर जगह विद्यमान है, तो किसके लिए शरीर ढकना है। उनकी नग्नता सामाजिक व्यवस्था की अवहेलना थी। यह खुले तौर पर पुरुष माँगों की अवहेलना थी। एक महिला की कामुकता से संबंधित पितृसत्तात्मक धारणाओं और उसे नियंत्रित करने की कोशिश के खिलाफ विद्रोह था।

अक्का रहस्यवादी कवयित्री थी। जन श्रुति से यह ज्ञात होता है कि अक्का महादेवी अनन्य सुन्दरी थी और अपना जीवन चेनामल्लिकार्जुन (चेना यानि सुंदर और मल्लिकार्जुन यानि शिव) के सान्निध्य में बिताना चाहती थी लेकिन नियति को कुछ और ही मंज़ूर था। कौशिका नाम का राजा अक्का महादेवी पर मोहित हो गया और अक्का महादेवी के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। किंतु अक्का महादेवी इस विवाह के लिए कतई तैयार नहीं थी। माता - पिता की खुशी के लिए उन्होंने राजा को विवाह के लिए स्वीकृति दे दी किंतु दो शर्तों के साथ, पहली शर्त यह थी कि वो कभी भी अक्का महादेवी के भक्ति साधना में व्यवधान नहीं डालेगा और दूसरा कि वह उनकी स्वतंत्रता और साधु संतों से मिलने-जुलने में कोई रुकावट नहीं डालेगा। विवाह के बाद राजा ने किसी भी शर्त का पालन नहीं किया। ऐसी भी जनश्रुति मिलती है कि एक रोज राजा ने महादेवी पर अपनी इच्छा थोपने की कोशिश की जिससे व्यथित होकर अक्का महादेवी ने न केवल गृह त्याग किया, बल्कि वस्त्र और शील भी त्याग संतों की तरह घर से निकल गई और फिर कभी लौट कर वापिस नहीं आई। पितृसत्तात्मक समाज स्त्री को एक बनी बनाई परिपाटी से देखता आया है। स्त्री की पहचान उसके देह से की जाती है ना कि उसकी चेतना से। अक्का महादेवी ने इस धारणा का भी खंडन किया। अक्का महादेवी ने कहा अगर स्त्री होना मात्र एक देह होना है, तो मैं स्त्री नहीं हूँ और ना ही मैं वेश्या हूँ फिर क्यों मेरे पीछे-पीछे आते हो।

"उसके उन्नत स्तनों से

छलकते यौवन से वशीभूत

तुम यहाँ तक चले आए

भैया, "भैया, तुम उसके पीछे-पीछे

यहाँ तक चले आए

न मैं स्त्री हूँ

न वेश्या

जब तुम देखते हो मुझे टकटक,

समझ पाते हो कुछ?"[4]

अक्का महादेवी की कविताएँ भक्ति, प्रेम, और समर्पण की कविताएँ तो है ही; साथ ही स्त्री मुक्ति की भी कविताएँ हैं। अक्का महादेवी की कविताओं को एक भक्त की कविता के रूप में तो पढ़ा जाना ही चाहिए साथ ही एक स्त्री-मन से उपजी कविताओं की तरह भी पढ़ा जाना चाहिए जो शिव के साथ अपने संबंधों का उद्घाटन करती है, बिना लोक लाज की परवाह किए। जिसमें वह तथा कथित दासी या पत्नी मात्र नहीं है, वह प्रेमिका भी है और उसकी अपनी कुछ आकांक्षाएँ भी हैं जो एक साधारण स्त्री की सहज ही अपने स्वेच्छा से चुने हुए पुरुष के प्रति होती हैं। भक्त के लिए भक्ति आरोपित वस्तु नहीं होती है वह स्वयं उसका चुनाव करता है। मल्लिकार्जुन अक्का महादेवी के चुने हुए पुरुष हैं, समाज द्वारा थोपे हुए नहीं। उनके लिए भक्ति साध्य नहीं साधन है। मल्लिकार्जुन की भक्ति द्वारा वे उस अवस्था तक पहुँचाना चाहती हैं, जहाँ स्त्री-पुरुष का भेद समाप्त हो, देह की सत्ता खत्म हो। "साधना की तरतम सोपान श्रेणियों पर चढ़कर वह सिद्धि की उस चरमावस्था पर पहुँचीं, जिसमें लिंग ज्ञान तक नहीं रहता।"[5]

स्त्री देह का सवाल उठाने वाली अक्का महादेवी पहली भारतीय नारीवादी कवयित्री हैं। अक्का महादेवी के लिए वस्त्र त्याग करना कोई सामान्य बात नहीं है, बल्कि उन मान्यताओं का खंडन है जो यह मानती है कि स्त्री मात्र सज-सवर कर चार दीवारी के भीतर रखने की वस्तु है। जिसका अपना कोई अधिकार नहीं वह पुरुष की भोगलिप्सा को मिटाने की साधन है। अक्का महादेवी को न जाने कितने तरह की फब्तियाँ एवं जबरदस्ती का सामना करना पड़ा होगा, इसकी हम आज महज कल्पना ही कर सकते हैं। गगन गिल ने ठीक ही लिखा है-"मनुष्य सुंदरता सहन करने के लिए नहीं बने। सुंदरता उनमें सदा से हिंसा जगाती आई है। तिस पर एक स्त्री की सुंदरता, भक्त मन वाला उसका आलोक, उसकी आभा, उसकी तन्मयता।"[6]

अक्का कहती हैं-

"भैया, निसंकोच तुम आ गए उसकी मोहिनी काया देख कर

अकथ किसी काल्पनिक सुख के बहकावे में,

तुम आ गए,

उसकी स्त्री देह देखकर पीछे-पीछे

×

एक मल्लिकार्जुन को छोड़

सब पुरुष मेरे भाई हैं,

हट, दूर हट, मूर्ख!"[7]

अक्का महादेवी का संघर्ष न केवल एक भक्त के रूप में था बल्कि एक शरीर के रूप में, एक महिला के रूप में सामाजिक भूमिकाओं द्वारा प्रताड़ित एक सामाजिक प्राणी के रूप में था। मध्यकाल में मुक्ति का साधन भक्ति था। महिलाओं को इतनी स्वतंत्रता भी नहीं थी कि वे अपने अनुसार जीवन जी सकें , भक्ति कर सकें। इतिहास में होने वाला कोई भी आंदोलन क्यों महिलाओं को आकर्षित करता रहा है? चाहे थेरियां हों या मीरा या अंडाल या फिर कोई भी अन्य स्त्री। इसका उत्तर हमें अक्का महादेवी के वचनों में मिलता है। अक्का के वचनों को पढ़ते हुए लगता है कि वह न केवल पितृसत्तात्मक सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति चाहती थी, बल्कि व्यक्तिगत पराधीनता, जिसमें स्त्री पराधीनता प्रमुख है, से मुक्ति चाहती थी। स्त्री को चेतना के स्तर

पर मनुष्य नहीं माना जाता था। इस पर अक्का महादेवी कहती हैं-

"कहते हैं, मेरे पास नहीं है काया

फिर कैसे उसमें

तुम्हारा निवास है

प्रभु ?"[8]

वह बता देना चाहती हैं कि जब सर्वशक्तिमान ही स्त्री-पुरुष में अंतर नहीं करता, हृदय में निवास करने से पहले, तो तुम कौन होते हो एक स्त्री को बताने वाले कि वह भक्ति कर सकती है या नहीं। समाज की बुराइयों पर वह बार-बार प्रहार करती हैं और कहती हैं कि मुझे शील का पाठ पढ़ाने वाले तुम क्या जानो कि शील क्या होता है? काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद को लेकर चलने वाले क्या मल्लिकार्जुन की भक्ति करेंगे? स्त्री के लिए बनाए गए मापदंड जिसके आधार पर उसका जीवन तय किया जाता है जाति, वर्ग, कौमार्य, रूप और सुंदरता सब का अक्का महादेवी निषेध करती हैं और इन सब से ऊपर उठती हैं।

"ओ भाइयों क्यों कसते हो बोल,

बिखरे बाल,

मुरझाए मुखड़े,

सुखी देह लिए

इस स्त्री पर?

ओ पिताओं, क्यों सताते हो इस स्त्री को?

उसके अंगों में नहीं प्राण,

छोड़ दिया उसने यह संसार,

त्याग दी सब इच्छा,

हो गई वह भक्तिन

सोई थी वह मल्लिकार्जुन के संग,

अपनी जात गंवा बैठी है।"[9]

भौतिक प्रेम जो वासना से लिप्त होता है, जिसमें बाहरी सुंदरता प्रमुख होती है, उसका विरोध उनमें मिलता है। अक्का महादेवी सभी मानवीय एवं शारीरिक भोग लिप्सा से भरे संबंधों को नाजायज एवं तिरस्कार भरी नजरों से देखती हैं। घर एवं भौतिक पति को त्यागने के दिन से ही; अक्का ने शिव के अलावा किसी पुरुष की ओर नहीं देखा। वो मल्लिकार्जुन के अलावा सभी पुरुषों को भाई कह कर संबोधित करती थीं। कहते हैं अक्का के मना करने के बाद भी राजा कोशिका ने अक्का को वापस घर लाने के लिए कई प्रयास किए थे। ऐसे समय में जब स्त्री अपना जीवन साथी स्वयं नहीं चुन सकती थी। अक्का महादेवी अपना प्रेमी चुनती है और खुलकर यह बात कहती हैं कि उनसे यह दो संबंध एक साथ नहीं सहे जाते लौकिक और अलौकिक का द्वंद उनके यहाँ दिखाई देता है।

"घर में पति,

बाहर प्रेमी,

मुझे से नहीं निभते दोनों

लौकिक और

अलौकिक

मुझे नहीं निभते दोनों

एक हाथ में

बेल फल

दूसरे में कठ-बेल

मुझे नहीं बन पड़ता,

मल्लिकार्जुन!"[10]

यह समझने की जरूरत है कि अक्का महादेवी कोई देवी नहीं थीं। वह एक साधारण स्त्री थीं जो अपने जीवन के निर्णय लेने में सशक्त थीं। सामान्य स्त्री की तरह जीवन के प्रति सकारात्मक थीं। जैसे कोई प्रेमिका खुद को अपने प्रेमी या पति के बाहों में कल्पना करती है। "आकर मेरा परिभोग किया, री! आलिंगन में उसके मैं चौंक गई री।"[11] अक्का भी मल्लिकार्जुन के संग स्वयं की कल्पना करती हैं। अन्य भक्त कवियों की तरह अक्का महादेवी भी खुद को मल्लिकार्जुन के साथ कभी पति, कभी प्रेमी, कभी दासी के रूप में कल्पित करती हैं। ए. के. रामानुजम अपनी पुस्तक 'स्पीकिंग ऑफ द शिवा' मे लिखते हैं कि संसार में जीने की वैधता को लेकर अक्का महादेवी का जो अस्पष्ट व्यवहार दिखता है वह उनकी कविता का आकर्षक पहलू है। "कभी-कभी ईश्वर उनके अवैध प्रेमी हैं, कभी-कभी वैध पति।"[12]

"उसने सौदा किया मेरे दिल से,

लूट ली मेरी देह

वसूली में

ले लिया मेरा सुख,

मेरा ले लिया

सर्वस्व

मैं अनुरागिनी

मेरे मल्लिकार्जुन की!"[13]

मैं दुल्हन हूँ और मेरे मल्लिकार्जुन दूल्हा है। मल्लिकार्जुन के अलावा कोई ऐसा पुरुष नहीं जिस पर वो भरोसा कर सकें। समाज जिसे उनका पति कहता है उसे वह अस्वीकार करती हैं और अपनी गृहस्थी मल्लिकार्जुन के साथ बसाती हैं।

"जोड़ा मुझ को

पक्की गृहस्थी से

ब्याह रचाया मल्लिकार्जुन ने मुझे से!"[14]

यह गृहस्थी उन्होंने आसानी से नहीं बसाई थी, इसके लिए उन्हें वन, जंगल, पहाड़ और नदियाँ को पार करना पड़ा था। समाज के बोल सहने पड़े थे। कुछ आलोचकों का मानना है कि अक्का महादेवी विवाह संस्था का विरोध करती हैं। किंतु यदि उनके वचनों को सही से पढ़ा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह विवाह संस्था का नहीं बल्कि समाज द्वारा स्त्री पर थोपे गए पितृसत्तात्मक सोच का विरोध करती हैं। वह बार-बार कहती हैं कि मल्लिकार्जुन मेरा पति है और मैं उसकी पत्नी हूँ।

प्रेम के कई रूप होते है, निषिद्ध प्रेम, वियोग में प्रेम और मिलन में प्रेम। अक्का महादेवी के यहाँ भी यह तीनों प्रकार के प्रेम सहज ही देखने को मिलते हैं। प्रेम सर्वप्रथम समर्पण माँगता है और अक्का महादेवी के यहाँ समर्पण दिखाई देता है। अक्का महादेवी के यहाँ प्रेम मुक्ति है। भक्ति से प्रेम, प्रेम से मुक्ति का सफर ही मल्लिकार्जुन तक का सफर है। प्रेम बंधन नहीं मुक्ति है जरा से मुक्ति, मोह से, लोभ से, शरीर से, लोकलाज से, माया से, कुल से, देश से, लोक और परलोक से। अक्का महादेवी कहती हैं जो मरण शील हो वह प्रेम, प्रेम नहीं है माया है।

"वह सुंदर मेरा प्रेम

न उसे मृत्यु न जरा

न आकार

न स्थान, न दिशा

न अंत, न जन्म चिन्ह

वही मेरा प्रेम,

सुन री, ओ मां!

×

वही मेरा प्रभु,

मेरा पति, मल्लिकार्जुन!"[15]

प्रेम में प्रिया से मिलने की जो अकुलाहट जो छटपटाहट प्रेमी में होती है, वह अक्का महादेवी में सहज ही देखने को मिलती हैं। वह प्रेम में घबराकर बार-बार मल्लिकार्जुन को पुकारती हैं। प्रेम में मिलन और वियोग की स्थिति बराबर बनी रहती है। वह कहती हैं कि वन भी तुम हो, वन के सब देव तरु भी तुम हो, तरुओं के बीच विचरते खग-मृग भी तुम हो सब कुछ तुम ही हो किंतु यह हृदय बस एक बार तुम्हें देख लेना चाहता है, दर्शन के लिए मेरी आँखें तड़प रही है। अक्का महादेवी कहती है कि मैंने इस शरीर की लज्जा, परिवार का मोह यह सारी दुनियादारी तुम्हारे लिए छोड़ दी है। बस एक बार तुम्हारा दर्शन प्राप्त करना चाहती हूँ। किंतु इसी के विपरीत अक्का महादेवी के वचन इस ओर भी संकेत करते हैं कि जैसे उन्हें शिव प्राप्त हो चुके हैं और उन्होंने मल्लिकार्जुन का साक्षात दर्शन भी कर लिया है। जिस प्रेम की खोज में अक्का महादेवी पर्वतों, नदियों एवं जंगलों में भ्रमण करती हैं वह तो उनके घट में ही स्थित है। अपने वचन में अक्का महादेवी संकेत करते हुए कहती हैं कि जिस परम तत्व की खोज में, मैं भटकती रही वह तो मेरे घट में ही विराजमान थे, मात्र उस घट में झाँकने की जरूरत थी। यही बात कबीर दास

ने भी कही थी।

'कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे बन माहि

ऐसे घट-घट राम है, दुनिया खोजती नाहि'

अक्का भी कहती हैं -

"जैसे स्वर्ण में उसका रंग

मुझमें थे तुम

मैंने देखी मुझ में

तुम्हारे होने की विडंबना,

बिना कोई झलक दिखलाए,

ओ मल्लिकार्जुन!"[16]

ऐसे कई वचन अक्का महादेवी के मिलते हैं, जिनमें उन्होंने मल्लिकार्जुन से एका होने की बात कही है। लिंगायत परंपरा में शिव और शक्ति सूर्य और उसकी किरणों की तरह अविभक्त हैं, परम सत्ता की स्थिर स्थिति शिव है और उसकी गतिशील स्थिति शक्ति है। यह दर्शन अक्का महादेवी के वचनों मे भी दिखाई देता है। भक्त और प्रेमी के बीच में बहुत ही बारीक रेखा होती है। कई बार भक्त, भक्ति करते-करते प्रेमी बन जाता है और कई बार प्रेमी एक भक्त बन जाता है। प्रेमी अपने प्रेम में एकाधिकार चाहता है और चाहता है कि कोई और उसके प्रेमी से प्रेम न करें जैसे वह करता है। लेकिन वहीं भक्त चाहता है कि सारा संसार उसके स्वामी की भक्ति करें। अक्का महादेवी के यहाँ प्रेम और भक्ति का अंतर मिट गया है। वे बार-बार अपने प्रेमी से स्वामी से अपने अहम, अहंकार को खत्म करने की बात करती हैं।

"भेजो मुझे दर-दर

हाथ फैलाए,

भीख मांगने को

और अगर मांगू भीख,

तो मत देने देना उन्हें

और अगर वे दें,

तो गिरा देना उसे धरती पर

और अगर वह गिर जाए,

तो मेरे उठाने से पहले

ले जाने देना उसे कुत्ते को,

ओ मल्लिकार्जुन!"[17]

प्रभु को प्राप्त करने के लिए किशोरी युवती का मन घर त्याग के निकला तो है लेकिन रास्ते में आने वाली कठिनता और सुख में बिताए गए दिनों को कोई कैसे भूल सकता है। वह भी तब, जब न शरीर पर वस्त्र हो, न खाने को भोजन, न पीने को पानी, न रहने को घर और न दुख बांटने के लिए कोई साथी। अक्का महादेवी का वैराग्य में पल्लवित कष्टसाध्य जीवन एक आध्यात्मिक सोता-सा हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हमारा समाज उनके इस दाय को ग्रहण कर सका है? "क्या नारी के बड़े से बड़े त्याग को, आत्म-निवेदन को, संसार ने अपना अधिकार नहीं किंतु उसका अद्भुत दान समझकर नम्रता से स्वीकार किया है? कम से कम इतिहास तो नहीं बताता कि उसके किसी बलिदान को पुरुष ने उसकी दुर्बलता के अतिरिक्त कुछ और समझने का प्रयत्न किया।"[18]

अतः निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि अक्का महादेवी को स्त्री अस्मिता, स्त्री देह, स्त्री चेतना और स्त्री के चुनाव के प्रश्नों को बारहवीं सदी में उठाने वाली एक नारीवादी चेतना की कवयित्री के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। जो भक्ति के माध्यम से न केवल खुद मुक्त होती है, बल्कि स्त्री जाति की मुक्ति की बात करती है। शिव को अपना प्रेमी मानती है। अक्का महादेवी की कविताएँ आज भी कन्नड साहित्य में एक आदर्श की तरह है। अक्का के साथी संतों ने अक्का के वचनों को सर्वाधिक कवितात्मक माना है। अक्का महादेवी अभिव्यक्ति के लिए रहस्यात्मकता को अपनाती हैं। अपने वचनों में वो धर्मनिरपेक्ष काव्य बिंबों को तलाशती हैं और यही उन्हें विशिष्ट बनाता है। उनके वचनों में प्रकृति सहज ही उपस्थित हो जाती है जैसे पेड़-पौधे, पशु, पक्षी, जंगल, पहाड़, नदियाँ आदि। जिन वचनों में वो शिव के सुंदर रूप का वर्णन करती है, वो सहज ही स्त्री हृदय से निकले गीत मालूम होते हैं।

अक्का महादेवी आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी बारहवीं सदी में थीं। स्त्री की स्थिति आज भी बहुत कुछ नहीं बदली है। पितृसत्ता की आँख आज भी स्त्री के पीछे किस तरह पड़ती है, यह हम देख सकते हैं। उस समाज में पत्थर के देवता के सिवा स्त्रियों के पास कोई विकल्प ही नहीं था, जिसके सहारे वह मुक्त हो सकती। इसके बावजूद पितृसत्ता ने उसके रास्ते में कांटे बिछाए जैसा कि अक्का महादेवी स्वयं कहती हैं-

"पत्थर का सहारा लिया

तो संसार ने पत्थर तुड़वाया

पहाड़ का आसरा लिया

तो संसार ने पहाड़ तुड़वाया

कहीं भी जाऊं

संसार पड़ गया है

मेरे पीछे

ओ मल्लिकार्जुन,

क्या करूं अब? क्या करूं?"[19]

संदर्भ सूची

1. डॉ. सुमन राजे. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास. 2022, पृ. 210
2. सुजाता. आलोचना का स्त्री पक्ष पद्धति, परंपरा और पाठ. 2021. पृ. 152
3. वही. पृ. 163

4. गगन गिल. तेजस्विनी अक्का महादेवी के वचन . 2023.पृ. 124
5. डॉ. एस. एस. कृष्णमूर्ती. हिन्दी एवं कन्नड साहित्य की प्रमुख धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन. पृ.238
6. गगन गिल. तेजस्विनी अक्का महादेवी के वचन. 2023.पृ. 13
7. वही. पृ. 133
8. गगन गिल. तेजस्विनी अक्का महादेवी के वचन. 2023.पृ. 151
9. गगन गिल. तेजस्विनी अक्का महादेवी के वचन. 2023.पृ. 48
10. गगन गिल. तेजस्विनी अक्का महादेवी के वचन. 2023.पृ. 41
11. वही . पृ. 147
12. ए. के. रामानुजन. स्पीकिंग ऑफ शिवा . 1971 . पृ. 112
13. गगन गिल . तेजस्विनी अक्का महादेवी के वचन . 2023. पृ. 70
14. वही. पृ. 135
15. वही. पृ. 49
16. वही. पृ. 39
17. वही. पृ. 33
18. वर्मा, महादेवी. शृंखला की कड़िया. 2015.पृ. 32
19. वही. पृ. 141